SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

उच्चतर माध्यमिक स्तर पर महिला एवं पुरुष शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन

अनंता कुमारी, शोधार्थी, शिक्षा विभाग,
बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुज़फ्फरपुर, बिहार, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Author
अनंता कुमारी, शोधार्थी, शिक्षा विभाग,
बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय,
मुज़फ्फरपुर, बिहार, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 18/01/2022
Revised on : -----
Accepted on : 25/01/2022
Plagiarism : 00% on 18/01/2022

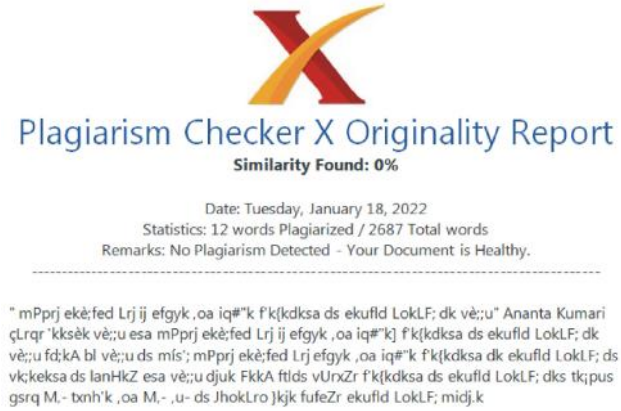
Plagiarism Checker X Originality Report
Similarity Found: 0%

Date: Tuesday, January 18, 2022
Statistics: 12 words Plagiarized / 2687 Total words
Remarks: No Plagiarism Detected - Your Document is Healthy.

" mPprj ekè;fed Lrj ij efgyk ,oa iq#"k f'k{kdksa ds ekufld LokLF; dk vè;;u" Ananta Kumari çLrqr 'kksèk vè;;u esa mPprj ekè;fed Lrj ij efgyk ,oa iq#"k} f'k{kdksa ds ekufld LokLF; dk vè;;u fd;kA bl vè;;u ds mís'; mPprj ekè;fed Lrj efgyk ,oa iq#"k f'k{kdksa dk ekufld LokLF; ds vk;keksa ds lanHkZ esa vè;;u djuk FkkA ftlds vUrxZr f'k{kdksa ds ekufld LokLF; dks tk;pus gsrq M.- txnh'k ,oa M.- ,u- ds JhokLro }kjk fufeZr ekufld LokLF; midj.k

शोध सार

प्रस्तुत शोध अध्ययन में उच्चतर माध्यमिक स्तर पर महिला एवं पुरुष, शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन किया। इस अध्ययन के उद्देश्य उच्चतर माध्यमिक स्तर महिला एवं पुरुष शिक्षकों का मानसिक स्वास्थ्य के आयामों के संदर्भ में अध्ययन करना था। जिसके अन्तर्गत शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य को जाँचने हेतु डॉ. जगदीश एवं डॉ. एन. के श्रीवास्तव द्वारा निर्मित मानसिक स्वास्थ्य उपकरण का प्रयोग किया गया। जिसमें निष्कर्षतः पाया गया कि उच्चतर माध्यमिक स्तर के महिला एवं पुरुष शिक्षकों के स्वायत्ता, समूह जनित व्यवहार, वातावरणीय सक्षमता आयामों में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है, लेकिन उनके सकारात्मक अवमूल्यांकन, वास्तविकता का प्रत्यक्षीकरण एवं व्यक्तित्व संश्लेषण में सार्थक अंतर पाया गया है।

मुख्य शब्द

मानसिक स्वास्थ्य, शिक्षक, मूल्यांकन.

प्रस्तावना

आज का युग कम्प्यूटर युग है। कम्प्यूटर से देश, समाज में एक नई क्रांति का आह्वान हुआ है, लेकिन फिर भी बच्चों के मन में ज्ञान की ज्योति जगाने वाले शिक्षकों का आज भी उतना ही महत्व है जितना पुराने जमाने में था। माता–पिता के बाद बच्चों को सही शिक्षा देने में शिक्षकों का महत्वपूर्ण स्थान है।

शिक्षक द्वारा दी जाने वाली ज्ञान की जो रफ्तार है, उसमें एक दिन ऐसा आ जाएगा जब समूचा ब्रह्मांड ज्ञान के समक्ष छोटा लगेगा। आज बढ़ती प्रतियोगिता और बच्चों के बढ़ते ज्ञान ने जिस प्रकार कर्म के साथ समझौता किया, उससे लगता है कि ज्ञान और कर्म की

शिक्षा आज के समय में जिंदा रहने की अनिवार्यता बन गई है। शिक्षक वह जीवन की मूर्ति है, जो दूसरों को ज्ञान का उजाला बांटकर उनके जीवन को गतिशील, भावना और उच्च विचारों से जुड़े कर्म कर जीवन की ऊँचाइयों पर ले जाते हैं।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि सही दिशा निर्देशन कर प्रमुख घटक शिक्षक है। शिक्षा के कई उद्देश्यों की पूर्ति इनसे होती है। इन्हें प्रशिक्षित किया जाता है, उनकी सुविधा–असुविधा का ध्यान रखा जाता है, समाज का उनके प्रति कर्त्तव्य होता है, और उनका भी समाजा के प्रति उत्तरदायित्व रहता है। शिक्षक अपने दायित्वों को पूर्ण निर्वाह करने की कोशिश भी करते हैं क्योंकि उन्हें इस कार्य के लिए वेतन मिलता है।

लेकिन प्राचीन काल में शिक्षक का जीवन सरल होता था, आवश्यकताएँ भी सीमित होती थीं। वही आज आवश्यकताएँ, इच्छाएँ असीमित हो चुकी हैं जिसके कारण शिक्षकों को अपने अनुरूप वेतन नही मिलता है और न ही उन्हें संतुष्टि प्राप्त होता है। जिसका सीधा सम्बन्ध उनके मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ता है व इसके कारण उनके मन में असंतोष, घृणा तथा अनेक कुप्रवृत्तियाँ आ जाती हैं। जीवन मे तनाव व कुंठाग्रस्त होने के कारण शिक्षक का मानसिक स्वास्थ्य बिगड़ जाता है।

लैडेल के अनुसार मानसिक स्वास्थ्य का अर्थ वास्तव में धरातल पर वातावरण के साथ उचित समायोजन करने के है। इस प्रकार मानसिक स्वास्थ्य का अभिप्राय संवेगात्मक है। मनोवैज्ञानिकों के अनुसार मानसिक स्वास्थ्य एक तरह का व्यवहार है, जो व्यक्ति को जीवन के प्रमुख क्षेत्रों, सामाजिक, एवं शैक्षिक आदि जगह सफलतापूर्वक कार्य करने में मदद करता है। मानसिक रूप से स्वस्थ व्यक्ति व्यक्तित्व की विभिन्न आवश्यकताओं, शीलगुणों आदि के बीच सामंजस्य रखता है।

अतः कहा जा सकता है कि मानसिक स्वास्थ्य के अनुसार वह अपने व्यवहार को सही तरीके से दर्शाता है क्योंकि मानसिक रूप से स्वस्थ्य रहने के लिए एक शिक्षक में चिन्ता तथा संघर्ष से रहित पूर्ण समायोजित आत्मविश्वासी श्रेष्ठ एवं संतुलित आत्म–मूल्यांक सहनशीलता, संवेगात्मक परिपक्वता, निर्णय लेने की क्षमता का होना अति आवश्यक है। इन गुणों से युक्त शिक्षक प्रत्येक परिस्थितियों में भी निर्णय लेने की क्षमता रखता है। विद्यालय के मानसिक स्वास्थ्य को बनाये रखने में शिक्षक का महत्वपूर्ण स्थान है। बालकों के मानसिक स्वास्थ्य की उन्नति के लिए विद्यालय जो कार्य करता है उसमें शिक्षक ही विशेष रूप से सहायक होता है। अतः शिक्षक के मानसिक स्वास्थ्य का भी ठीक रहना अति आवश्यक है। जब तक शिक्षक मानसिक रूप से स्वस्थ नहीं होगा तब तक बालको के मानसिक स्वास्थ्य की उन्नति करने में आशा नहीं की जा सकती। जब शिक्षक वर्ग बालकों के प्रति अच्छा दृष्टिकोण रखते हुए अपने शैक्षिक कर्तव्यों और उत्तरदायित्वों का ठीक से पालन करें। इसके लिए सर्वप्रथम शिक्षक को अपने कार्य एवं व्यवसाय में रुचि लेना अति आवश्यक है। फराहबक्श, एस. (2004) ने विविध व्यावसायिक चरो के सम्बन्ध में माध्यमिक विद्यालय के प्रधानाध्यापकों के मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन किया। अध्ययन में पाया गया कि प्रधानाध्यापको में विद्यार्थियों की तुलना में तनाव एवं दु:श्चिता के लक्षण पाये गये। गुप्ता, एस.पी. एवं कुमार सुजीत (2008) ने माध्यमिक विद्यालय के प्रशासकों पर व्यावसायिक दबाव और उनका मानसिक स्वास्थ्य विषय पर अध्ययन किया। अध्ययन में पाया गया कि महिला एवं पुरुष प्रशासकों के मानसिक स्वास्थ्य समान हैं। कुमार फाजिया, अहमद जरार (2015) ने प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों की कार्य संतुष्टि पर उनके मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन किया। अध्ययन में पाया कि प्राथमिक विद्यालय के उच्च व निम्न महिला एवं पुरुष शिक्षकों की कार्य संतुष्टि पर उनके मानसिक स्वास्थ्य का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। ग्रोसी चन्द्रकांता, पवार नीरज (2015) ने सरकारी विद्यालय के शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन किया। अध्ययन में देखा गया कि सरकारी विद्यालय के पुरुष शिक्षक महिला शिक्षकों की तुलना में मानसिक स्वास्थ्य बेहतर पाया गया। कुमार विजय, पवन एवं कुमारी रीना (2013) ने छात्र शिक्षकों के लिंग व स्थान के सम्बन्ध में मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन किया। अध्ययन में पाया गया कि ग्रामीण व शहरी शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य में सार्थक अंतर पाया गया है।

उपरोक्त शोध अध्ययनों से स्पष्ट होता है कि शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य के विभिन्न संदर्भ में अध्ययन किये

गये है परन्तु उच्चतर माध्यमिक स्तर के महिला एवं पुरुष शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य के आयामों के संदर्भ में अध्ययन प्राप्त नहीं हुए हैं। इसलिए शोधकर्ता ने शोध का विषय उच्चतर माध्यमिक स्तर के महिला एवं पुरुष शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य के आयामों के संदर्भ में अध्ययन किया।

शोध अध्ययन के उद्देश्य

शोध अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य उच्चतर माध्यमिक स्तर के महिला एवं पुरुष शिक्षकों के संदर्भ में अध्ययन करना है।

शोध परिकल्पना

मुख्य शोध परिकल्पना

उच्चतर माध्यमिक स्तर के महिला एवं पुरुष शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य में सार्थक अंतर पाया जाता है।

गौण शोध परिकल्पना

1. उच्चतर माध्यमिक स्तर के महिला एवं शिक्षकों के सकारात्मक आत्ममूल्यांकन में सार्थक अंतर पाया जाता है।
2. उच्चतर माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के वास्तविक का प्रत्यक्षीकरण में सार्थक अंतर पाया जाता है।
3. उच्चतर माध्यमिक स्तर के महिला एवं पुरुष शिक्षकों के व्यक्तित्व संश्लेषण में सार्थक अंतर पाया जाता है।
4. उच्चतर माध्यमिक स्तर के महिला एवं पुरुष शिक्षकों के स्वायत्ता में सार्थक अंतर पाया जाता है।
5. उच्चतर माध्यमिक स्तर के महिला एवं पुरुष शिक्षकों के समूह जनित व्यवहार में सार्थक अंतर पाया जाता है।
6. उच्चतर माध्यमिक स्तर के महिला एवं पुरुष शिक्षकों के वातावरणीय सक्षमता में सार्थक अंतर पाया जाता है।

शोध विधि

इस शोध अध्ययन हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

जनसंख्या

प्रस्तुत शोध अध्ययन में मध्यप्रदेश के इंदौर एवं उज्जैन संभाग के समस्त उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत् महिला एवं पुरुष शिक्षकों को लिया गया है।

न्यादर्श

प्रस्तुत शोध अध्ययन में मध्यप्रदेश के इंदौर एवं उज्जैन संभाग के 300 शिक्षकों को न्यादर्श यादृच्छिक न्यादर्शन विधि द्वारा न्यादर्श के रूप में चयन किया गया है।

शोध उपकरण

शोध उद्देश्य की प्राप्ति हेतु शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य को जानने के लिए डॉ. जगदीश एवं डॉ. ए के के श्रीवास्तव द्वारा निर्मित मानसिक स्वास्थ्य मापनी का प्रयोग किया गया है।

प्रदत्तों की प्रकृति प्रस्तुत शोध अध्ययन में (आफिक) प्रकार के है। कारण एवं विश्लेषण से विधियों का प्रयोग गया है।

01. मध्यमान
02. प्रमाणिक विचलन
03. टी–परीक्षण

गौण शोध परिकल्पना

परिकल्पना (i) उच्चतर माध्यमिक स्तर के महिला शिक्षकों के सकारात्मक आत्ममूल्यांकन में सार्थक अंतर पाया है। परीक्षण हेतु उच्चतर माध्यमिक स्तर के महिला शिक्षकों के सकारात्मक आत्ममूल्याकन में सार्थक अंतर नहीं जाता है रूपी शून्य परिकल्पना का निर्माण किया गया है।

क्रम संख्या	मानसिक स्वास्थ्य के आयाम	लिंग	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	df	टी .मान
01	सकारात्मक आत्ममूल्यांकन	महिला	172	24.13	6.17	298	2.037
02		पुरुष	128	26.34	7.49		

(स्त्रोतः प्राथमिक समंक)

स्वतंत्रता के अंश 298 एवं 0.05 विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक मान 1.96 है।

उपर्युक्त तालिका संख्या के अवलोकन से ज्ञात होता है कि उच्चतर माध्यमिक स्तर के महिला एवं पुरुषों के सकारात्मक आत्ममूल्यांकन के मध्यमान का मान क्रमशः 24.73 तथा 26.34 है। मानक विचलन का मान 6.17 तथा 7.49 है एवं टी परीक्षण का अवकलित 2.037 है जो कि 0.05 विश्वास के स्तर पर आवश्यक तालिका मान से अधिक है। इसलिए शून्य परिकल्पना उच्चतर माध्यमिक स्तर के महिला एवं पुरुषों के सकारात्मक आत्ममूल्याकन में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है अस्वीकृत होती है तथा गौण शोध परिकल्पना उच्चतर माध्यमिक स्तर के महिला पुरुष शिक्षकों के सकारात्मक आत्ममूल्यांकन में सार्थक अंतर पाया जाता है स्वीकृति होती है। परिणामस्वरूप सामान्यीकरण स्थापित होता है कि उच्चतर माध्यमिक स्तर के महिला एवं पुरुष शिक्षको सकारात्मक आत्ममूल्यांकन में सार्थक अंतर पाया जाता है।

परिकल्पना (ii) गौण शोध परिकल्पना

उच्चतर माध्यमिक स्तर महिला एवं पुरुष शिक्षकों के वास्तविकता प्रत्यक्षीकरण में सार्थक अंतर पाया जाता है, के परीक्षण हेतु उच्चतर माध्यमिक स्तर में महिला एवं पुरुष शिक्षकों के वास्तविकता प्रत्यक्षीकरण सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है रूपी शून्य परिकल्पना का निर्माण किया गया है।

क्रम संख्या	मानसिक स्वास्थ्य के आयाम	लिंग	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	df	टी .मान
01	वास्तविकता का प्रत्यक्षीकरण	महिला	172	25.31	5.43	298	2.049
02		पुरुष	128	27.27	5.65		

(स्त्रोतः प्राथमिक समंक)

स्वतंत्रता के अंश 298 एवं 0.05 विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक मान 96 है। उपर्युक्त तालिका संख्या 12 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि उच्चतर माध्यमिक स्तर के महिला एवं पुरुष शिक्षकों के वास्तविकता का प्रत्यक्षीकरण के मध्यमान का मान मान क्रमशः 25.31 तथा 27 .27 है। मानक विचलन का मान क्रमशरू 5.43 तथा 5.65 है एवं टी–परीक्षण का अवकलित मान 3.049 है जोकि 0.05 विश्वास के स्तर पर आवश्यक

तालिका मान से अधिक है इसलिए शून्य परिकल्पना उच्चतर माध्यमिक स्तर के महिला एव पुरुष शिक्षकों के वास्तविकता का प्रत्यक्षीकरण में सार्थक अंतर नही पाया जाता है, स्वीकृत होती है, परिणामस्वरूप सामान्यीकरण स्थापित होता है। उच्चतर माध्यमिक स्तर के महिला एवं पुरुष शिक्षको को वास्तविकता का प्रत्यक्षीकरण में सार्थक अंतर पाया जाता है।

परिकल्पना (iii) गौण शोध परिकल्पना

उच्चतर माध्यमिक महिला एवं पुरुष शिक्षकों के व्यक्तित्व संश्लेषण में सार्थक पाया जाता है के परीक्षण हेतु उच्चतर माध्यमिक स्तर के महिला एवं पुरुष शिक्षकों के व्यक्तित्व संश्लेषण में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है रूपी शून्य परिकल्पना का निर्माण किया गया है।

क्रम संख्या	मानसिक स्वास्थ्य के आयाम	लिंग	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	df	टी .मान
01	व्यक्तित्व संश्लेषण प्रत्यक्षीकरण	महिला	172	24.27	5.43	298	6.434
02		पुरुष	128	29.77	8.10		

(स्त्रोतः प्राथमिक समंक)

स्वतंत्रता के अंश 298 एवं 0.05 विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक मान 1.96 है।

उपर्युक्त तालिका संख्या 13 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि उच्चतर माध्यमिक स्तर के महिला एवं पुरुष शिक्षकों के व्यक्तित्व संश्लेषण के मध्यमान क्रमशः 2427 तथा 29.77 है मानक विचलन अ मान क्रमशः 6.70 तथा 8. 10 है एवं टी. परीक्षण का अवकलित 6.434 है जो कि 0.05 विश्वास के स्तर पर आवश्यक तालिका मान से अधिक है इसलिए शून्य परिकल्पना उच्चतर व्यक्तित्व संश्लेषण में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है, अस्वीकृत होती है तथा गौण शोध परिकल्पना उच्चतर माध्यमिक स्तर के महिला एवं पुरुष शिक्षकों के व्यक्तित्व संश्लेषण में सार्थक अंतर पाया जाता है, स्वीकृत होती है। परिणामस्वरूप सामान्यीकरण स्थापित होता है कि उच्चतर माध्यमिक स्तर के महिला एवं पुरुष शिक्षकों के व्यक्तित्व संश्लेषण में सार्थक अंतर पाया जाता है।

परिकल्पना (iv) गौण शोध परिकल्पना

उच्चतर माध्यमिक स्तर के महिला एवं पुरुष शिक्षकों के स्वायत्ता में सार्थक अंतर पाया जाता है, के परीक्षण हेतु उच्चतर माध्यमिक स्तर के महिला एवं पुरुष शिक्षकों के स्वायत्ता में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है रूपी शून्य परिकल्पना का निर्माण किया गया है।

क्रम संख्या	मानसिक स्वास्थ्य के आयाम	लिंग	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	df	टी .मान
01	व्यक्तित्व संश्लेषण प्रत्यक्षीकरण	महिला	172	18.99	3.68	298	1.664
02		पुरुष	128	19.70	3.67		

(स्त्रोतः प्राथमिक समंक)

क्रम संख्या	मानसिक स्वास्थ्य के आयाम	लिंग	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	df	टी .मान
01	समूह जनित व्यवहार	महिला	172	24.24	5.96	298	0.336
02		पुरुष	128	8.35			

(स्त्रोतः प्राथमिक समंक)

स्वतंत्रता के अंश 298 एवं 0.05 विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक मान 1.96 है।

उपर्युक्त तालिका संख्या 1.5 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि उच्चतर माध्यमिक स्तर के महिला एवं पुरुष शिक्षकों के स्वायत्ता के मध्यमान का मान क्रमशः 18.99 तथा 19.70 है मानक विचलन का मान क्रमशरू 3.68 तथा 3.67 है एवं टी. परीक्षण का अवकलित मान 1664 है जो कि 0.05 विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक तालिका मान से कम है, इसलिए शून्य परिकल्पना उच्चतर माध्यमिक स्तर के महिला एवं पुरुष शिक्षकों के स्वायत्ता में सार्थक अंतर पाया जाता है।

परिकल्पना (iv) गौण शोध परिकल्पना

उच्चतर माध्यमिक स्तर के महिला एवं पुरुष शिक्षकों के स्वायत्ता में सार्थक अंतर पाया जाता है, के परीक्षण हेतु उच्चतर माध्यमिक स्तर के महिला एवं पुरुष शिक्षकों के स्वायत्ता में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है रूपी शून्य परिकल्पना का निर्माण किया गया है।

क्रम संख्या	मानसिक स्वास्थ्य के आयाम	लिंग	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	df	टी .मान
01	समूह जनित व्यवहार	महिला	172	26.90	15.90	298	1.136
02		पुरुष	128	9.59			

(स्त्रोतः प्राथमिक समंक)

स्वतंत्रता के अंश 298 एवं 0.05 विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक मान 1.96 है।

उपर्युक्त तालिका संख्या 1.5 है अवलोकन से ज्ञात होता है कि उच्चतर माध्यमिक स्तर के महिला एवं पुरुष शिक्षकों के वातावरणीय सक्षमता के मध्यमान का मान क्रमशः 26.90 तथा 25.10 है। मानक विचलन का मान क्रमशः 15.90 तथा 9.59 है एवं टी परीक्षण का अवकलित मान 1.136 है जो कि 0.05 विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक तालिका मान से कम है, इसलिए शून्य परिकल्पना उच्चतर माध्यमिक स्तर के महिला एवं पुरुष शिक्षकों के वातावरणीय सक्षमता में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है, स्वीकृत होती है तथा गौणशोध परिकल्पना उच्चतर माध्यमिक स्तर के महिला एवं पुरुष शिक्षको के वातावरणीय सक्षमता में सार्थक अंतर पाया जाता है, अस्वीकृत होती है। परिणामस्वरूप सामान्यीकरण स्थापित होता है कि उच्चतर माध्यमिक स्तर के महिला एवं पुरुष शिक्षकों की वातावरणीय सक्षमता में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

मुख्य शोध परिकल्पना

उच्चतर माध्यमिक स्तर के महिला एवं पुरुष शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य में सार्थक अंतर पाया जाता है के परीक्षण हेतु उच्चतर माध्यमिक स्तर के महिला एवं पुरुष के मानसिक स्वास्थ्य में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है

रूपी शून्य परिकल्पना का निर्माण किया गया है।

क्रम संख्या	आयाम	टी. मूल्य का परिकलित मान	मुक्तांश 0.05 विश्वास के स्तर पर टी. मूल्य का तालिका
01	सकारात्मक आत्ममूल्याकन	2.037"	1.96
02	वास्तविकता का प्रत्यक्षीकरण	3.049"	
03	व्यक्तित्व संश्लेषण	6.434”	
04	स्वायत्ता	1.664”	
05	समूह जनित व्यवहार	0.336’	
06	वातावरणीय सक्षमता	1.136’	

उपरोक्त तालिका संख्या 1.6 के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है। उच्चतर माध्यमिक स्तर के महिला एवं पुरुष शिक्षकों की स्वायत्ता समूह जनित व्यवहार, वातावरणीय सक्षमता में सार्थक अंतर नहीं पाया है। लेकिन सकारात्मक आत्ममूल्यांकन, वास्तविकता का प्रत्यक्षोकरण, व्यक्तित्व संश्लेषण में सार्थक अंतर पाया जाता है। परिणामस्वरूप कहा जा सकता है कि शून्य परिकल्पना उच्चतर माध्यमिक स्तर के महिला एवं पुरुष शिक्षकों के स्वायत्ता, समूह नित व्यवहार, वातावरणीय सक्षमता आयामों के लिए स्वीकृत होती है तथा मुख्य शोध परिकल्पना मानसिक स्वास्थ्य में सकारात्मक आत्ममूल्यांकन, वास्तविकता का प्रत्यक्षीकरण, व्यक्तित्व संश्लेषण आयामों के लिए स्वीकृत होती है। अतः यह स्पष्ट होता है कि उच्चतर माध्यमिक स्तर के महिला एवं पुरुष शिक्षकों के सकारात्मक आत्ममूल्यांकन, वास्तविकता का प्रत्यक्षीकरण व्यक्तित्व संश्लेषण में सार्थक अंतर पाया जाता है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन के परिणामों से अधोलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए:

01. महिला एवं पुरुष शिक्षकों के सकारात्मक आत्ममूल्यांकन में सार्थक अंतर पाया जाता है।
02. महिला एवं पुरुष शिक्षकों के वास्तविकता के प्रत्यक्षीकरण में सार्थक अंतर पाया जाता है।
03. महिला एवं पुरुष शिक्षकों के व्यक्तित्व संश्लेषण में सार्थक अंतर पाया जाता है।
04. महिला एवं पुरुष शिक्षकों की स्वायत्ता में सार्थक अंतर नही पाया जाता है।

शैक्षिक निहितार्थ

01. सरकार द्वारा महिलाओं को सामाजिक स्वतंत्रता से सम्बन्धित अपने अधिकारों के बारे में उन्मुख करायें।
02. महिला एवं पुरुष शिक्षकों की समाज, परिवार तथा विद्यालय में शिक्षकों के प्रति सकारात्मक विचार रखे जायें।
03. महिलाओं शिक्षकों को नैतिक बंधनों से मुक्ति दिलाई जाये ताकि वे समाज के विकास में पूर्ण सहयोग दे सकें।

परिसीमन प्रस्तुत शोध अध्ययन में मध्यप्रदेश के इंदौर व उज्जैन संभाग के उच्चतर माध्यमिक स्तर पर कार्यरत महिला एवं पुरुष शिक्षकों को लिया गया है।

सुझाव

प्रस्तुत शोध का भविष्य में निम्न प्रकार से विस्तार कर सकते हैं:

01. महिला एवं पुरुष शिक्षकों को उनकी योग्यता के अनुसार कार्यभार दिया जाए।

02. महिला एवं पुरुष शिक्षकों को समुचित प्रकाश, वायु संचार, बैठक व्यवस्था, शान्त एवं सुरुचिपूर्ण वातावरण प्रदान किया जाये।
03. इनको सेवारत प्रशिक्षण कार्यशाला, संगोष्ठी आदि में सम्मिलित होने के उपर्युक्त अवसर प्रदान किए जायें।
04. इन्हें विषयवस्तु को तकनीकी द्वारा अभिप्रेरित किया जाये।
05. प्रस्तुत शोध अध्ययन में जनसंख्या का आकार बढ़ा सकते हैं।

सन्दर्भ सूची

1. ओझा राजकुमार, *औद्योगिक मनोविज्ञान,* अग्रवाल पब्लिकेशन पंचम संस्करण, पेज नं. 234 – 244.
2. मंगल एस. के (2002) *स्टेटिक्स इन साइकोलोजी एण्ड एजूकेशन* 2nd इण्डिन प्रेन्टाइजहाल ऑफ इंडिया, च्अजण् सजक, नई दिल्ली।
3. कुमार प्रमोद (2008), *भारतीय शिक्षा का विकास एवं उसकी समस्याएँ,* संजय पब्लिकेशन्स, आगरा, पृष्ठ 272.
4. पाण्डेय, कल्पना (2007), *शिक्षा मनोविज्ञान,* टाटा मैक्ग्रा हिल पब्लिकेशन नई दिल्ली, पृष्ठ सं.10

****